कला एवं विज्ञान विद्यार्थियों में व्यग्रता का तुलनात्मक अध्ययन

दिनेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग
पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ सिटी–230002, उ0प्र0, भारत
dineshpbpg13@gmail.com

प्राप्त तिथि–25.09.2018, स्वीकृत तिथि–24.10.2018

सार– वर्तमान अध्ययन में कला एवं विज्ञान समूह के विद्यार्थियों के मध्य व्यग्रता स्तर का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य था। अध्ययन हेतु 80 विद्यार्थियों का समूह (छात्र/छात्राएं) जिनमें 40 छात्र तथा 40 छात्राएं थी तथा समूह में कला एवं विज्ञान दोनों वर्ग से लिये गये। प्रत्येक उपचार में 20 प्रयोज्य को लिया गया। दुर्गानन्द सिन्हा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग प्रत्येक प्रयोज्य पर किया गया। कला वर्ग के विद्यार्थियों का माध्यमान 95 तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का माध्यमान 100 पाया गया। कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक पाया गया जिनमें सार्थक अन्तर था।

बीज शब्द– कला एवं विज्ञान समूह के विद्यार्थी, चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।

A comparative analysis of anxiety of Art and Science students

Dinesh Kumar
Assistant Professor, Department of Psychology
P.B. P.G. College, Pratapgarh City, Pratapgarh-230002, U.P., India
dineshpbpg13@gmail.com

Abstract- In present studies mental anxiety was studied between arts and science students. A group of 80 students was taken in which there were 40 girls and 40 boys and each group included from both art and science students. 20 subjects were taken in each treatment and each subject was treated individually. Two ways ANOVA was applied on the data obtained. The mean of art students and science students were calculated. The anxiety of Science students was found to be more as compared to Arts students.

Key words- Students of Art and Science students, comparative analysis of anxiety.

1. **परिचय–** आधुनिक युग में जहाँ औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विकास अपनी चरम सीमा पर है वहीं व्यक्ति का सामान्य जीवन सामाजिक जटिलताओं एवं निरन्तर बाधाओं से घिरा है। ऐसे समय को व्यग्रता/चिन्ता का युग कहा जा सकता है। तीव्र गति से होने वाली तकनीकी सामाजिक, प्रकृति के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप सामाजिक अशान्ति, बेरोजगारी, प्राकृतिक आपदाएं, तनाव, प्रतिस्पर्धा, घृणा, द्वेष, संदेह, संघर्ष आदि ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी हैं जिसमें अधिकतर व्यक्ति अपनी क्षमता का प्रयोग नहीं कर पाता है, यद्यपि व्यक्ति निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है फिर भी इसमें कुसमायोजन के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं, व्यक्ति बेचैनी का अनुभव करता है, उसे नींद नहीं आती है। परिणाम स्वरूप व्यक्ति सामान्य परिस्थिति में भी भय का अनुभव करता है। इस तथ्य को कार्लमार्क्स[1] ने उल्लेख करते हुये कहा है कि ''चिन्ता के कारण व्यक्ति भय की चेतन अनुभूति तथा प्रत्याशित संकट के सम्बन्ध में चिंतित होने लगता है, परेशानी उत्पन्न होने लगती है तथा संज्ञानात्मक नियन्त्रण और समस्या समाधान में बाधा उत्पन्न होने लगती है। फ्रायड[2] का विचार था कि शारीरिक यौनमदन के परिणाम स्वरूप चिन्ता की उत्पत्ति होती है। मिशेल[3] ने बताया कि 'चिन्ता संवेगात्मक उद्दोलन की वह अवस्था है जिसकी अनुभूति भय के रूप में हो सकती है।' स्पाइलबर्गर[4] का कथन है कि ''चिन्ता उद्दोलन की वह अवस्था है जो भय से बचने के कारण उत्पन्न होती है।'' सिन्हा और सिंह[5] ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च चिन्ता कठिन कार्यों में निष्पादन का निर्धारण करती है। सिन्हा[6] के अनुसार निम्न चिन्ता वाले व्यक्तियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च चिन्ता वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक होती है।

2. **उद्देश्य–** प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कला एवं विज्ञान समूह के छात्र/छात्राओं के चिन्ता के स्तर का अध्ययन करना है।

3. **परिकल्पना–**

1. कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में चिन्ता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. छात्र एवं छात्राओं पर चिन्ता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
3. कला एवं विज्ञान समूह के छात्र एवं छात्राओं के मध्य अन्तःक्रिया में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

4. **अभिकल्प–** वर्तमान अध्ययन में 2X2 द्विकारक अभिकल्प स्वतन्त्र समूह का प्रयोग किया गया है जिसमें प्रथम परिवर्त्य विषय के दो प्रकार कला एवं विज्ञान, और लिंग के दो प्रकार छात्र एवं छात्राओं, लिए गये।

5. **प्रतिदर्श–** यह अध्ययन 80 विद्यार्थियों पर किया गया, जिसमें कला वर्ग के 40 विद्यार्थी तथा विज्ञान वर्ग के 40 विद्यार्थी थे। इनमें कला वर्ग के 20 छात्र व 20 छात्राएं तथा विज्ञान वर्ग के 20 छात्र व 20 छात्राएं शामिल की गयी।

6.**सामग्री/मापनी–** चिन्ता के स्तर का मापन करने के लिए दुर्गानन्द सिन्हा[7] द्वारा बनायी गई चिन्ता मापनी प्रयुक्त की गयी।

7. **विश्वसनीयता–** चिन्ता परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक टेस्ट–रीटेस्ट से + 0.85 तथा स्पीट–हॉफसे + 0.92 पाया गया।

8. **प्रशासन प्रक्रिया–** सर्वप्रथम हमनें कला एवं विज्ञान समूह के छात्र/छात्राओं से सम्पर्क स्थापित किया फिर सहज वातावरण में बैठाकर गया तथा उनसे सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया गया फिर उनकी रूचि परीक्षण के लिए उत्पन्न की गयी। जब उनकी रूचि उत्पन्न हो गयी तब उनसे कहा गया कि इस प्रपत्र में 100 कथन दिये हुए हैं अतः आप कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें तत्पश्चात् यदि आप कथन से सहमत हों तो सहमत वाले पर विकल्प पर सही का निशान लगा दें और यदि कथन से असहमत हों तो असहमत वाले कथन पर सही का निशान लगा दें। आपको कथन का उत्तर सहमत या असहमत एक पर ही देना है।

9. **प्राप्तांक–** चिन्ता मापनी में 100 कथन थे जो व्यक्ति के जीवन के 10 क्षेत्रों यथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित, आकांक्षा एवं जीवन लक्ष्य से सम्बन्धित, परिवार से सम्बन्धित, मित्रता और प्रेम से सम्बन्धित, समाज एवं सामाजिक अनुमोदन से सम्बन्धित, भविष्य से सम्बन्धित, सभ्यता एवं युद्ध से सम्बन्धित, अपराध एवं लज्जा से सम्बन्धित, भौतिक या शरीर क्रिया विज्ञान से सम्बन्धित तथा शुद्ध मनोवैज्ञानिकता से सम्बन्धित थे। इस मापनी के कथनो में हाँ या नहीं में से किसी एक पर सही का निशान लगाना था। इस प्रक्रिया द्वारा व्यग्रता के स्तर को ज्ञात किया गया।

10. **परिणाम–** प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में चिन्ता के स्तर का अध्ययन करना था। अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों के सांख्यिकी विश्लेषण में टू–वे एनोवा का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणाम निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–1
कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के चिन्ता के स्तर का अध्ययन उपरांत प्राप्त प्राप्तांक

प्रसारण के स्रोत Source of Variance	वर्गों का योग S.S.	D.F.	M.S.	F-Ratio
अ. (कला एवं विज्ञान)	1427.51	1	1427.51	751.32
ब. (लिंग)	316.01	1	316.01	166.32
अ x ब	12.61	1	12.61	6.63
त्रुटि	144.75	76	1.90	
योग	1900.88	79		

.95(1, 76) पर एफ का मान = 3.97
.99(1, 76) पर एफ का मान = 6.96

11. **निष्कर्ष**– प्रस्तुत शोध पत्र में पाया गया कि चिन्ता के स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र/छात्राओं पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। छात्र एवं छात्राओं के मध्य भी .05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। कला एवं विज्ञान वर्ग के बीच .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। लिंग एवं वर्ग के मध्य अन्तःक्रिया में .05 स्तर पर सार्थकता पायी गयी। छात्रों का मध्यमान = 659.5 तथा छात्राओं का मध्यमान = 739 पाया गया। विज्ञान समूह के विद्यार्थियों का मध्यमान = 784 तथा

कला वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान = 614.5 पाया गया। इससे पता चलता है कि विज्ञान समूह के विद्यार्थियों का चिन्ता स्तर अधिक था जबकि कला वर्ग के विद्यार्थियों का कम। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में चिन्ता का स्तर अधिक पाया गया।

सन्दर्भ

1. मार्क्स, एम0 एच0(1976) इन्ट्रोडक्शन टू साइकोलॉजीः साइकोलॉजिकल एक्सपेरीमेंट्स एण्ड टेस्ट मेजरमेंट्स ऑफ एन्जाइटी, भार्गव प्रकाशन, वाराणसी, उ0प्र0।
2. फ्रायड, एस0(1936) इनहिबिसन, सिम्पटम्स एण्ड एन्जाइटी, लानडूः होग्राथ प्रेस।
3. मिशेल, डब्लू0(1993) इन्ट्रोडक्शन टू पर्सनालिटी, जॉन वाईली एण्ड सन्स, पंचम् संस्करण।
4. स्पाइलबर्गर(1966) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, रूचि समायोजन और चिन्ता, भार्गव प्रकाशन, आगरा, उ0प्र0, भारत, पृ0सं0 659।
5. सिन्हा, डी0 एण्ड सिंह, टी0 आर0(1958) मेनीफेस्ट एन्जाइटी एण्ड परफॉरमेन्स ऑफ प्रोब्लम सोल्विंग टास्क, जे. कन्सल्ट साइकोलॉजी, खण्ड–23, पृ0 469।
6. सिन्हा, डी0(1966) ए साइकोलॉजिकल एनालिसिस ऑफ सम फैक्टर्स एसोसिएटेड विद सक्सेज एण्ड फेलियोर इन यूनिवर्सिटी एजूकेशन–इंटेलीजेंस, एन्जाइटी एण्ड एडजेस्टमेण्ट ऑफ एकेडेमिक अचीवमेण्ट एण्ड नॉन अचीवमेण्ट, साइको स्टडीज।
7. सिन्हा, डी0(1961) दी डेवलपमेन्ट ऑफ टू एन्जाइटी स्केल्स मेन्स, खण्ड–1, पृ0 10।